बादली तेंदुए की नई प्रजाति

डॉ. चंद्रशीला गुप्ता

मात्र एशिया के जंगलों में पाया जाने वाला बादली तेंदुआ बड़ी बिल्लियों में सबसे छोटा है। इसकी खाल पर बादलों जैसे धब्बों से इसे अपने परिदृश्य में छिपने में मदद मिलती है। इन्हीं धब्बों की वजह से इसका नाम बादली तेंदुआ पड़ा है। आसानी से नज़र न आने की वजह से इसके बारे में सारी जानकारी चिड़ियाघरों से ही मिल पाई है।

अनुवांशिकी के अनुसार बादली तेंदुए बड़ी बिल्लियों के कुल *फेलिडी* में आते हैं, इनका उपकुल पेन्थरिनी है जिसमें सिंह, बाघ, चीता, तेंदुआ, हिम तेंदुआ आदि आते हैं। वैसे बादली तेंदुआ सही मायने में तेंदुआ नहीं हैं - इसका वैज्ञानिक नाम *नियोफेलिस* है। सन 2006 तक इस तेंदुए की एकमात्र प्रजाति *नेबुलोसा* मानी जाती रही है, जिसकी चार उप प्रजातियां हैं।

हाल ही में इण्डोनेशिया के बोर्नियो व सुमात्रा द्वीपों में एक नई प्रजाति खोजी गई है। यू.एस. कैंसर संस्थान के डॉ. स्टीफन ओब्रिन के अनुसार बोर्नियो के बादली तेंदुए का जिनेटिक अध्ययन स्पष्ट दर्शाता है कि इसे पृथक प्रजाति का दर्जा दिया जाना चाहिए। इसके डी.एन.ए. में तकरीबन 40 भिन्न न्यूक्लियोटाइड पता चले हैं। यह भिन्नता शेर व तेंदुए की 56 न्यूक्लियोटाइडों की भिन्नता के लगभग बराबर है। अतः इसे भिन्न प्रजाति स्वीकारना उचित है। डी.एन.ए. विश्लेषण के आधार पर मुख्य प्रजाति से इसके पृथक्करण का काल 11-30 लाख वर्ष पूर्व अनुमानित है। यह प्रजाति मुख्य प्रजाति से भौगोलिक पृथक्करण की वजह से अलग हुई होगी। बोर्नियो के इस बादली तेंदुए का प्रस्तावित नाम *नियोफेलिस नेबुलोसा डियार्डी* है।

इस तेंदुए के फर पर बादली धब्बे अपेक्षाकृत छोटे व गहरे हैं एवं खाल भी गहरे रंग की है। धब्बों के भीतर का स्लेटी गोला स्पष्ट दिखाई देता है। वैसे अभी शोध जारी है। वर्तमान में बोर्नियो के मात्र तीन नमूनों की ही जांच हुई है। अतः निष्कर्षो को पूरी जनसंख्या पर लागू करने के लिए और नमूनों को शामिल करना होगा।

इण्डोनेशिया के बोर्नियो द्वीप पर स्थित सबागो राष्ट्रीय उद्यान में तेंदुओं की संख्या लगभग 5-11 हज़ार आंकी गई है। यहां शेर की गैर मौजूदगी से यह तेंदुआ ही इकोसिस्टम के शीर्ष पर विराजमान है व इसकी खासी बड़ी संख्या इस जंगल की सेहत की सूचक है। इसे शिकार के लिए हिरन, बंदर, सुअर आदि पशुओं की आवश्यकता होती है। यह किसी भी वन की आवश्यकता है।

इसके नर की ऊंचाई करीब साढ़े तीन फीट, साथ में इतनी ही लंबी पूंछ भी होती है। नर लगभग 20-25 किलोग्राम एवं मादा 10-15 किलोग्राम वज़नी होती है। इनके पैर समस्त बड़ी बिल्ली कुल में सबसे छोटे व सुदृढ़ होते हैं। इनके छोटे होने से गुरुत्व केंद्र बीच में आ जाता है जिससे पेड़ पर चढ़ने में आसानी होती है। इनके पंजों पर तीखे नख इन्हें डालियों पर मज़बूत पकड़ बनाने में मदद करते हैं। शरीर के बराबर लंबी, हमेशा मुड़ी हुई पूंछ डालियों पर संतुलन बनाए रखने में मददगार होती है।

बादली तेंदुए की दूसरी विशेषता इसके लंबे केनाइन दांत हैं। कोपेनहेगन प्राणी संग्रहालय के डॉ. क्रिश्चिएन्सन ने इनके असामान्य लंबे कंकाल व तलवारनुमा दांत की उपस्थिति के कारण इन्हें आदिम विलुप्त तलवारनुमा दांत वाले बाघ का एकमात्र वंशज माना है। यह कुछ अनुकूलन व विशेषताओं के साथ भिन्न रूप से विकसित हुआ है।

इनकी त्वचा कीमती होती है व इनके तलवारनुमा दांत मलेशिया में कर्णफूल की तरह इस्तेमाल होते हैं। जनजातियां बादली तेंदुए के साथ आराम से रह लेती हैं। दरअसल वे मानते हैं कि यह कभी मनुष्य पर हमला नहीं करता, यहां तक कि पीछा करने और घायल होने पर भी नहीं। यह ज़्यादातर छोटे स्तनधारियों व पक्षियों पर हमला करता है व मुर्गे आदि पकड़ने के लिए गांवों में भी प्रवेश कर जाता है।

यह पेड़ पर ही चढ़े रहना पसंद करता है व सिक्किम, भूटान, असम, मेघालय, नेपाल, बर्मा, चीन व मलाया के शीतोष्ण, सदाबहार वनों में पाया जाता है। यह अपने भार से बड़ा जन्तु मारकर आसानी से ऊपरी शाखाओं पर खींच ले जाता है। इसके मज़बूत जबड़े व बड़े केनाइन शिकार में मदद करते हैं। वन्यजीवन में इसके महत्व को देखते हुए इसे मेघालय के राज्य पशु का दर्जा दिया गया है। यह बड़े आराम से चिड़ियाघरों में रहता है व इसे पालतू बनाना भी आसान है। ***(स्रोत फीचर्स)***